This question paper contains **4+2** printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **500**

Unique Paper Code : **205555** **D**

Name of the Paper : **Natak Ekanki Evam Nibandh**

(नाटक एकांकी एवम् निबंध)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi Discipline**

Semester : **V**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.)

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 7+7+7=21

(क) तुम शिल्पी विशु के पुत्र हो, धर्मा! कोणार्क और किसी के स्पर्श से कैसे जग सकता था ? जैसे मरुस्थल में कहीं निर्झरिणी सहसा गायब हो जाने पर भी अन्यत्र बह निकलती है, वैसे ही मेरी भटकी हुई प्रतिभा तुम्हारे मन में विकस उठी धर्मा ! सैकड़ों, हजारों बरसों तक कोणार्क के उन्नत शिखर को देखकर लोग कहेंगे कि यह विशु और उसके बेटे की कला की सर्वोत्कृष्ट कृति है । मेरे जैसा भाग्यशाली पिता आज उत्कल में और कौन है ?

अथवा

इसके लिए मैं कृतज्ञ नहीं हो सकती । राजकुमार ! तुम्हारा कलंकी जीवन भी बचाना मैंने अपना धर्म समझा । और यह मेरे विश्वमैत्री की परीक्षा थी । जब मैं

P.T.O.

इसमें उत्तीर्ण हो गयी तब मुझे अपने पर विश्वास हुआ । विरुद्धक, तुम्हारा रक्त-कलुषित हाथ मैं छू भी नहीं सकती । तुमने कपिलवस्तु के निरीह प्राणियों का, किसी भी भूल पर, निर्दयता से वध किया, तुमने पिता से विद्रोह किया, विश्वासघात किया; एक वीर को छल से मार डाला और अपने देश के, जन्मभूमि के विरुद्ध अस्त्र ग्रहण किया ! तुम्हारे ऐसा नीच और कौन होगा ! किन्तु यह सब जानकर भी मैं तुम्हें रणक्षेत्र से सेवा के लिए उठा लायी ।

अथवा

परन्तु मैंने यह सब सह लिया । इसलिए कि मैं टूटकर भी अनुभव करती रही कि तुम बन रहे हो । क्योंकि मैं अपने को अपने में न देखकर तुममें देखती थी । और आज यह सुन रही हूँ कि तुम सब छोड़कर संन्यास ले रहे हो ? तटस्थ हो रहे हो ? उदासीन ? मुझे मेरी सत्ता के बोध से इस तरह वंचित कर दोगे ? वही आषाढ़ का दिन है । उसी तरह मेघ गरज रहे हैं । वैसे ही वर्षा हो रही है । वही मैं हूँ । उसी घर में हूँ ।

(ख) महीनों से मन बेहद-बेहद उदास है । उदासी की कोई खास वजह नहीं, कुछ तबीयत ढीली, कुछ आसपास के तनाव और कुछ उनसे टूटने का डर, खुले आकाश के नीचे भी खुलकर सांस लेने की जगह की कमी, जिस काम में लगकर मुक्ति पाना चाहता हूँ, उस काम में हजार बाधाएँ; कुल ले-देकर उदासी के लिए इतनी बड़ी चीज नहीं

बनती । फिर भी रात-रात नींद नहीं आती । दिन ऐसे बीतते हैं, जैसे भूतों के सपनों की एक रील पर दूसरी रील चढ़ा दी गई हो और भूतों की आकृतियाँ और डरावनी हो गई हों । इसलिए कभी-कभी तो बड़ी-से-बड़ी परेशानी करने वाली बात हो जाती है और कुछ भी परेशानी नहीं होती, उल्टे ऐसा लगता है, जो हुआ, एक सहज क्रम में हुआ, न होना ही कुछ अटपटा होता और कभी-कभी बहुत मामूली-सी बात भी भयंकर चिन्ता का कारण बन जाती है ।

अथवा

माता-पिता की याद आते ही बालक शिवशंभू का सुख स्वप्न भंग हो गया । दरबार समाप्त होते ही वह दरबार-भवन, वह एम्फीथियेटर तोड़कर रख देने की वस्तु हो गया । उधर बनाना, इधर उखाड़ना पड़ा । नुमायशी चीजों का यही परिणाम है । उनका तितलियों का सा जीवन होता है । माई लार्ड । आपने कछाड़ के चाय वाले साहबों की दावत खाकर कहा था कि लोग यहाँ नित्य हैं और हम लोग कुछ दिन के लिए । आपने वह 'कुछ दिन' बीत गए । अवधि पूरी हो गई । अब यदि कुछ दिन और मिलें तो वह किसी पुराने पुण्य के बल से समझिए । उन्हीं की आशा पर शिवशंभू शर्मा यह चिट्ठा आपके नाम भेज रहा है, जिससे इन माँगे दिनों में तो एक बार आपको अपने कर्तव्य का ख्याल हो ।

(ग) वेदना से प्रेरित होकर जन-साधारण के अभाव और उनकी वास्तविक स्थिति तक पहुँचने का प्रयत्न यथार्थवादी साहित्य करता है । इस दशा में प्रायः सिद्धान्त बन जाता है कि हमारे दुख और कष्टों के कारण प्रचलित नियम और प्राचीन सामाजिक रूढ़ियाँ हैं । फिर तो अपराधों के मनोवैज्ञानिक विवेचन के द्वारा यह भी सिद्ध करने का प्रयत्न होता है कि वे सब समाज के कृत्रिम पाप हैं । अपराधियों के प्रति सहानुभूति उत्पन्न कर सामाजिक परिवर्तन के सुधार का आरंभ साहित्य में होने लगता है । इस प्रेरणा में आत्मनिरीक्षण और शुद्धि का प्रयत्न होने पर भी व्यक्ति के पीड़न, कष्ट और अपराधों से समाज को परिचित कराने का प्रयत्न भी होता है और यह सब व्यक्ति-वैचित्र्य से प्रभावित होकर पल्लवित होता है ।

अथवा

कर्म-सौंदर्य के जिस स्वरूप पर मुग्ध होना मनुष्य के लिए स्वाभाविक है और जिसका विधान कवि-परम्परा बराबर करती चली आ रही है, उसके प्रति उपेक्षा प्रकट करने और कर्म-सौंदर्य के एक दूसरे पक्ष में ही केवल प्रेम और भ्रातृ-भाव के प्रदर्शन और आचरण में ही—काव्य का उत्कर्ष मानने का जो एक नया फैशन टालस्टाय के समय से चला है, एक एकदेशीय है । दीन और असहाय जनता को निरंतर पीड़ा पहुँचाते चले जाने वाले क्रूर आततायियों को उपदेश देने, उनसे दया की भीख माँगने और प्रेम जताने तथा उनकी सेवा-शुश्रूषा करने में ही कर्तव्य की सीमा नहीं मानी जा सकती, कर्मक्षेत्र का

एकमात्र सौंदर्य नहीं कहा जा सकता । मनुष्य के शरीर के जैसे दक्षिण और वाम दो पक्ष हैं, वैसे ही उनके हृदय के भी कोमल और कठोर, मधुर और तीक्ष्ण, दो पक्ष हैं और बराबर रहेंगे । काव्य-कला की पूरी रमणीयता इन दोनों पक्षों के समन्वय के बीच मंगल या सौंदर्य के विकास में दिखायी पड़ती है ।

2. हिंदी नाटक के विकास की रूपरेखा स्पष्ट कीजिए । 15

अथवा

भारतेन्दु-युगीन नाटकों की विशेषताएँ लिखिए ।

3. नाटक के तत्त्वों के आधार पर 'अजातशत्रु' नाटक की समीक्षा कीजिए । 15

अथवा

'कोणार्क' नाटक की अभिनेयता पर विचार कीजिए ।

अथवा

'आषाढ़ का एक दिन' नाटक के आधार पर कालिदास की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए ।

4. 'रीढ़ की हड्डी' नामक एकांकी के रंग-शिल्प पर विचार कीजिए । 8

अथवा

'शिवाजी का स्वरूप' एकांकी का मूल प्रतिपाद्य लिखिए ।

5. हिंदी निबंध के विकास पर प्रकाश डालिए । 8

अथवा

हिंदी निबंध के विकास में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के योगदान का उल्लेख कीजिए ।

6. रामचंद्र शुक्ल की निबंध-शैली पर प्रकाश डालिए । 8

अथवा

'शिवशंभू के चिट्ठे बनाम लार्ड कर्जन' निबंध के मूल कथ्य की समीक्षा कीजिए ।